भारत सरकार | लोक सभा

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय | अतारांकित प्रश्न सं. 1493

वाणिज्य विभाग

दिनांक 28 जुलाई,2026 को उत्तर दिए जाने के लिए

**भारत का वस्तु व्यापार घाटा**

1493. **श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा:**

क्या **वाणिज्य और उद्योग** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) वर्तमान वर्ष सहित पिछले बीस वर्षों के दौरान भारत के वस्तु व्यापार घाटे का वर्ष वार ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार भारत के निर्यात और आयात को देखते हुए वस्तु व्यापार घाटे के वर्तमान स्तर को वहनीय मानती है और यदि हाँ, तो इसका औचित्य क्या है: और

(ग) यदि नहीं, तो लगातार हो रहे व्यापार घाटे के क्या कारण हैं और इसमें योगदान देने वाले प्रमुख कारक कौन से हैं; और

(घ) व्यापार घाटे को कम करने तथा आयात पर निर्भरता घटाने के लिए घरेलू उत्पादन में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री

(श्री जितिन प्रसाद)

(क) पिछले बीस वर्षों में भारत के पण्यवस्तु निर्यात लगभग साढ़े तीन गुना बढ़ गया है, जो वित्त वर्ष 2006-07 में 126.41 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2025-26 में 441.75 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है। इसी प्रकार, घरेलू मांग और विनिर्माण क्षमताओं में बढ़ोतरी के कारण आयात भी वर्ष 2025-26 में 194.81 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 776.01 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है।

| वर्ष | निर्यात (बिलियन अमेरिकी डॉलर) | आयात (बिलियन अमेरिकी डॉलर) | व्यापार संतुलन (बिलियन अमेरिकी डॉलर) |
|---|---|---|---|
| वित्तीय वर्ष 2006-07 | 126.41 | 194.81 | -68.39 |
| वित्तीय वर्ष 2007-08 | 163.13 | 251.65 | -88.52 |
| वित्तीय वर्ष 2008-09 | 185.30 | 303.70 | -118.40 |
| वित्तीय वर्ष 2009-10 | 178.75 | 288.37 | -109.62 |
| वित्तीय वर्ष 2010-11 | 249.91 | 369.77 | -119.86 |
| वित्त वर्ष 2011-12 | 306.06 | 489.33 | -183.27 |
| वित्तीय वर्ष 2012-13 | 300.47 | 490.74 | -190.27 |
| वित्त वर्ष 2013-14 | 314.49 | 450.20 | -135.71 |

| वर्ष | निर्यात (बिलियन अमेरिकी डॉलर) | आयात (बिलियन अमेरिकी डॉलर) | व्यापार संतुलन (बिलियन अमेरिकी डॉलर) |
|---|---|---|---|
| वित्त वर्ष 2014-15 | 310.34 | 448.03 | -137.69 |
| वित्त वर्ष 2015-16 | 262.29 | 381.01 | -118.72 |
| वित्त वर्ष 2016-17 | 275.85 | 384.36 | -108.50 |
| वित्त वर्ष 2017-18 | 303.53 | 465.58 | -162.05 |
| वित्त वर्ष 2018-19 | 330.08 | 514.08 | -184.00 |
| वित्त वर्ष 2019-20 | 313.36 | 474.71 | -161.35 |
| वित्त वर्ष 2020-21 | 291.81 | 394.44 | -102.63 |
| वित्त वर्ष 2021-22 | 422.00 | 613.05 | -191.05 |
| वित्त वर्ष 2022-23 | 451.07 | 715.97 | -264.90 |
| वित्त वर्ष 2023-24 | 437.17 | 674.00 | -236.83 |
| वित्त वर्ष 2024-25 | 437.70 | 721.20 | -283.50 |
| वित्त वर्ष 2025-26 | 441.75 | 776.01 | -334.27 |
| वित्त वर्ष 2025-26 (अप्रैल-जून) | 111.57 | 180.31 | -68.75 |
| वित्त वर्ष 2026-27 (अप्रैल-जून) | 129.58 | 216.17 | -86.60 |

***स्रोत: डीजीसीआईएस, टीआईए पोर्टल***

(ख) और (ग) भारत के पण्यवस्तु व्यापार घाटे को उसके बाह्य क्षेत्र और तेजी से विकसित हो रही, निवेश-आधारित अर्थव्यवस्था की संरचनात्मक विशेषताओं के व्यापक संदर्भ में समझना आवश्यक है। यद्यपि देश में लगातार पण्यवस्तु व्यापार घाटा देखा गया है, फिर भी मजबूत सेवा निर्यात, प्रचुर मात्रा में प्रेषण प्रवाह, स्थिर पूंजी प्रवाह और पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार के कारण भारत का बाह्य क्षेत्र मजबूत और टिकाऊ बना हुआ है।

यह घाटा मुख्य रूप से संरचनात्मक असंतुलन के बजाय तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था की आयात आवश्यकताओं को दर्शाता है। भारत के आयात का एक बड़ा हिस्सा उत्पादक प्रकृति का है, जो घरेलू विनिर्माण क्षमताओं, बुनियादी ढांचे के निर्माण और निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में प्रत्यक्ष योगदान देता है। प्रमुख आयातों में कच्चा तेल, पूंजीगत वस्तुएं, इलेक्ट्रॉनिक सामान, मशीनरी, उर्वरक और अन्य मध्यवर्ती इनपुट शामिल हैं - ये सभी विनिर्माण, औद्योगिक विस्तार, बुनियादी ढांचे के विकास और ऊर्जा सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं। ये आयात उपभोग-आधारित देनदारियों के बजाय भारत की उत्पादक क्षमता और दीर्घकालिक विकास क्षमता को बढ़ाते हैं।

इस प्रकार, व्यापार घाटे को भारत के विकास के चरण, निवेश आवश्यकताओं और ऊर्जा निर्भरता के परिणाम स्वरूप देखा जा सकता है। घाटे के बावजूद, समग्र बाह्य क्षेत्र स्थिर बना हुआ है, जो

मजबूत आधारभूत कारकों द्वारा समर्थित है और वैश्विक अनिश्चितताओं के सामने स्थिरता और लचीलापन सुनिश्चित करता है।

साथ ही, भू-राजनीतिक तनाव, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, मुद्रास्फीति के दबाव और बाहरी मांग में कमी जैसे चुनौतीपूर्ण वैश्विक वातावरण के बावजूद, भारत के निर्यात ने उल्लेखनीय मजबूती प्रदर्शित की है। वित्त वर्ष 2025-26 में भारत का निर्यात अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुँच गया, जो रिकॉर्ड 863.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया। पण्यवस्तु निर्यात 441.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया और सेवा निर्यात बढ़कर 421.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। सेवा निर्यात से उत्पन्न पर्याप्त अधिशेष पण्यवस्तु व्यापार घाटे के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच का काम करता है और भारत के बाह्य क्षेत्र की स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

(घ) सरकार ने एक व्यापक रणनीति अपनाई है जिसका उद्देश्य दोहरे उद्देश्यों को प्राप्त करना है: घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत करके आयात पर निर्भरता को कम करना और साथ ही प्रतिस्पर्धात्मकता, बाजार पहुंच और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ गहन एकीकरण के माध्यम से निर्यात का विस्तार करना।

निर्यात को बढ़ावा देने के लिए, सरकार विदेश व्यापार नीति (एफटीपी) 2023 को लागू कर रही है, जो निर्यात विविधीकरण, बाजार पहुंच, व्यापार करने में सुगमता, डिजिटलीकरण और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में एकीकरण पर केंद्रित है। भारत ने अपने व्यापारिक संबंधो का भी काफी विस्तार किया है और वर्तमान में उसके 19 सक्रिय मुक्त व्यापार समझौते हैं, जिनमें से आठ प्रमुख मुक्त व्यापार समझौते 2021 के बाद हस्ताक्षरित हुए हैं या उन्हे अंतिम रूप दिया गया है, जो प्रमुख वैश्विक बाजारों तक बेहतर तरजीही पहुंच प्रदान करते हैं।

निर्यात संवर्धन मिशन, जिलों को निर्यात केंद्र के रूप में विकसित करना, ट्रेड ईकनेक्ट, व्यापार आसूचना और विश्लेषण (टीआईए) पोर्टल, इलेक्ट्रॉनिक मूल प्रमाण पत्र और सीमा शुल्क आधुनिकीकरण जैसी संस्थागत पहल निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत कर रही हैं, बाजार की जानकारी को बेहतर बना रही हैं, अनुपालन को सुगम बना रही हैं और निर्यातकों, विशेष रूप से लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को नए अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच बनाने में सक्षम बना रही हैं।

साथ ही, सरकार अवसंरचना, लॉजिस्टिक और व्यावसायिक पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के माध्यम से घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत कर रही है। प्रधानमंत्री गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान, राष्ट्रीय लॉजिस्टिक नीति, एसडब्लूआईएफटी के माध्यम से सीमा शुल्क प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण और व्यापार सुविधा में सुधार जैसी पहल लॉजिस्टिक लागत को कम कर रही हैं और औद्योगिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ा रही हैं।

रणनीतिक आयात पर निर्भरता को कम करने के लिए, सरकार महत्वपूर्ण क्षेत्रों में घरेलू क्षमता निर्माण को बढ़ावा दे रही है, प्रौद्योगिकी को अपनाने और नवाचार को प्रोत्साहित कर रही है, आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत बना रही है, कच्चे तेल, उर्वरक और महत्वपूर्ण खनिजों जैसी आवश्यक वस्तुओं के लिए आयात स्रोतों में विविधता ला रही है, और नवीकरणीय ऊर्जा और अन्य उभरते क्षेत्रों में निवेश में तेजी ला रही है।

इन उपायों का उद्देश्य भारत की निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता में धीरे-धीरे सुधार करना, घरेलू उत्पादन क्षमताओं को मजबूत करना, बाहरी झटकों से उत्पन्न होने वाली कमजोरियों को कम करना और बाहरी क्षेत्र की सतत दीर्घकालिक वृद्धि सुनिश्चित करना है।

******